■ कायमगंज : सीपी गेस्ट हाउस में आयोजित हर्बल प्लान्ट्स प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मौजूद मुख्य अतिथि सी.एस.ए.यू. के उपकुलपति प्रो. डा. वीके सूरी, द्रोपदी ट्रस्ट की चेयरपर्सन नीरा मिश्रा, समर्पण सेवा समिति की सचिव डा. मिथलेश अग्रवाल, प्रधानाचार्य पी रस आदि। (फोटो : एसएनबी)

आसपास

फर्रुखाबाद

राष्ट्रीय सहारा, कानपुर, बृहस्पतिवार, 27 दिसम्बर, 20

सहारा न्यूज ब्यूरो

कायमगंज, 26 दिसम्बर। नगर के सीपी गेस्ट हाउस में द्रोपदी ट्रस्ट दिल्ली व समर्पण सेवा समिति कायमगंज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'औषधीय पौधों की कृषि भूमिका एवं भविष्य' पर किसानों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. डा. वीके सूरी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. वीके सिंह निदेशक चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी

हर्बल मेडिकल प्लांट्स से लाभान्वित होंगे कृषक : डा. सूरी

■ 40 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का उपकुलपति ने किया उद्घाटन

■ द्रोपदी ट्रस्ट एवं समर्पण सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला

सहारा न्यूज ब्यूरो

कायमगंज, 26 दिसम्बर। नगर के सीपी गेस्ट हाउस में द्रोपदी ट्रस्ट दिल्ली व समर्पण सेवा समिति कायमगंज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'औषधीय पौधों की कृषि भूमिका एवं भविष्य' पर किसानों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. डा. वीके सूरी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. वीके सिंह निदेशक चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय कानपुर, द्रोपदी ट्रस्ट की अध्यक्ष नीरा मिश्रा एवं समर्पण सेवा समिति की सचिव डा. मिथलेश अग्रवाल ने औषधीय पौधों तथा काम्पिल्य क्षेत्र के विषय में जानकारी दी। इसके साथ-साथ मुख्य अतिथि ने कम्पिल के जैन चिकित्सालय एवं सीपी विद्या निकेतन में किसानों के लिये 40 दिनों के लिये कार्यशाला के आयोजन में औषधीय पौधों की जानकारी एवं विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्राद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के उप कुलपति प्रो. डा. वीके सूरी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि उप कुलसचिव डा. सूरी ने समस्त अभ्यर्थियों को सम्बोधित करते हुए हर्बल पौधों के महत्व एवं उपयोगिता पर गहन प्रकाश डालते हुए कहा कि हर्बल पौधों के प्रयोग का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति।

भारतीयों द्वारा हर्बल पौधों के प्रयोग का सबसे पुराना प्रमाण आज से लगभग 7 हजार वर्ष पूर्व लिखे ऋग्वेद में विस्तार से मिलता है। इसके अलावा यजुर्वेद में लगभग 80 औषधीय पौधों तथा अथर्ववेद में 295 पौधों के प्रयोग एवं महत्व का वर्णन मिलता है। इसी तरह पुराणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत जैसे प्राचीन एवं धार्मिक रूप के महत्वपूर्ण ग्रन्थों में भी इन पौधों का वर्णन मिलता है। सर्व प्रथम आयुर्वेद शास्त्र यूनान और ईराक आदि पश्चिमी देशों के आयुर्वेदज्ञों की प्रेरणा का भी स्रोत रहा है। विभिन्न मतान्तरों के पश्चात यह निश्चित है कि चिकित्सा शास्त्र का आरम्भ पंचाल प्रदेश के तथाकथित फर्रुखाबाद जनपद से ही हुआ। औषधीय पौधों का वर्षों से निरन्तर प्रयोग इस बात का प्रमाण है। एलोपैथिक जैसी आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी 100 से अधिक पौधों का सफलतापूर्वक प्रयोग हो रहा और इन पौधों से प्राप्त यौगिकों को विभिन्न प्रकार से असाध्य रोगों में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। प्राकृतिक जड़ी बूटियां, रोग के निवारण के साथ-साथ सामान्य स्वास्थ्य लाभ में भी अत्यन्त उपयोगी साबित हो रही है। आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में किये जा रहे नित्य नये प्रयोगों से यह सिद्ध हो गया है कि रोगों के निदान में औषधीय पौधों में पाये जाने वाले रसायनिक घटकों की क्रियाशीलता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह है। हर्बल पौधों की उपयोगिता को पुनः उसी शिखर पर पहुंचाने के लिये द्रोपदी ट्रस्ट दिल्ली की चेयरपर्सन नीरा मिश्रा द्वारा जो कदम उठाया गया है वह बहुत सराहनीय कार्य है। इससे 'एक पंथ दो काज' जैसी बात पूर्ण रूप से सत्य हो जायेगी। क्योंकि जहां एक ओर हर्बल पौधों की उपयोगिता शिखर पर बनी रहेगी वहीं युवा काश्तकारों को रोजगार के अच्छे अवसर मिलेंगे। अंत में उन्होंने कहा कि चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्राद्यौगिक विश्वविद्यालय कानपुर एवं द्रोपदी ट्रस्ट दिल्ली के बीच एम ओ यू साइन किया जा रहा है। इसके तहत अब द्रोपदी ट्रस्ट द्वारा आयोजित किये जाने वाली गोष्ठी आदि में विश्वविद्यालय द्वारा सहयोग किया जायेगा। जो कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि मैं द्रोपदी ट्रस्ट की अध्यक्ष नीरा मिश्रा को सहृदय धन्यवाद देना चाहता हूं, जिनके द्वारा हर्बल औषधीय पौधों

व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान विजय कुमार ... पुखराज ... मोहित ... डा. ... सिंह, डा. शंकर सिंह, डा. कौशल कुमार, ...

दैनिक जागरण

बृहस्पतिवार 27 दिसम्बर 2007 · पौष कृष्ण 3 · विक्रम 2064

कानपुर, 27 दिसम्बर, 2007

फर्रुखाबाद

लाभकारी औषधीय खेती अपनायें किसान

• आलू व गन्ने पर आश्रित न रहने की सलाह

• कायमगंज को प्रदेश का दूसरा अलीगढ़ बताया

कायमगंज-फर्रुखाबाद, अप्र: चंद्रशेखर आजाद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर बी.के. सूरी ने कहा कि फर्रुखाबाद बहुत उपजाऊ क्षेत्र है यहां के किसानों को आलू, गन्ने पर ही आश्रित न रहकर लाभकारी औषधीय फसलों को अपनाना चाहिये।

श्री सूरी सीपी. अतिथिगृह में द्रोपदी ट्रस्ट व समर्पण सेवा समिति द्वारा आयोजित ... की खेती पर 40 ... के उद्घाटन समारोह में ... में संबोधित कर रहे ... कानपुर से आते समय ... हरियाली देख मैं ... ने कायमगंज को ... बताया। उन्होंने ... पुराण, उपनिषदों में हजारों औषधीय पेड़ पौधों का उल्लेख है। उपेक्षा व जानकारी के अभाव में बहुत सी किस्में विलुप्त हो रही हैं। इस स्थिति में विलुप्त हो रहे पौधों के औषधीय गुणों का लाभ पाने से हम वंचित हो जायेंगे। इसलिये औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है, जिससे किसान को आर्थिक तथा पूरे देश को स्वास्थ्य संबंधी लाभ होगा। एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर डा.वीके. सिंह ने कहा कि कृषि ... में यह जनपद काफी जागरूक है। यहां

समारोह में मुख्य अतिथि डा.बीके. सूरी को स्मृति चिह्न देतीं नीरा मिश्रा व अन्य। जागरण

के कृषक उद्यमी बहुत आगे हैं। औषधीय पौधों में ... की खेती यहां शुरू हुई है किंतु उसे वैज्ञानिक ... की आवश्यकता है।

कार्यशाला की आयोजिका द्रोपदी ट्रस्ट की ट्रस्टी नीरा मिश्रा ने कहा कि इस क्षेत्र के किसानों में औषधीय पेड़ पौधों की खेती के प्रति जागरूकता हेतु 40 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी है, जिसमें 120 कृषकों को प्रशिक्षित किया जायेगा, ताकि वे आत्मनिर्भर बने एवं आयुर्वेद की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। समर्पण सेवा समिति व संचालिका अध्यक्ष श्रीमती मिथलेश अग्रवाल ने कहा कि उन्होंने जर्मनी में संस्कृत वि.वि. देखा। वहां लोग संस्कृत पढ़कर भारत के आयुर्वेद की जानकारी कर रहे हैं। ऐसे में अपने देश में भी आयुर्वेद की महत्ता को प्रचारित करने की आवश्यकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में द्रोपदी ट्रस्ट व समर्पण के तत्वावधान में आयुर्वेदिक पेड़-पौधों की खेती संबंधी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद के प्रणेता चरक, ... भी इसी क्षेत्र के रहे हैं। इस कारण आयुर्वेद के प्रसार में इस क्षेत्र का विशेष महत्व है। कार्यशाला के संचालक ... के ... ने कहा कि निकट भविष्य में आयुर्वेदिक खेती का महत्व बहुत अधिक बढ़ने वाला है। ... किसानों के लिये बहुत लाभकारी होगा। समारोह का संचालन ... त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर अनेक युवा जागरूक कृषक एवं स्वयंसेवी ... ने भाग लिया।

कैंपिल ... के अनुसार ... चिकित्सालय में आयोजित कार्यक्रम ... मुख्य अतिथि डा.वीके सिंह ने द्रोपदी ट्रस्ट के प्रयास को सराहनीय बताते हुये कहा कि इस कार्यशाला से जनपद में आयुर्वेद के प्रचार प्रसार की नई शुरूआत होगी। इस अवसर पर नीरा मिश्रा, डा.शंकर सिंह, डा.आरबी. सिंह, डा.कौशल किशोर ने कृषकों को संबोधित किया। नीरा मिश्रा ने ... कुमार ... ने मुख्य अतिथि को ... प्रतीक चिह्न भेंट की। पुखराज ... ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन ... शाक्य ने किया। समारोह में ... मंडल के ... पालीवाल, ... मिश्रा आदि ... शाक्य, ... चतुर्वेदी ... उपस्थित रहे।